06.10.2020
06.10.2020

B.A. Part-II
Economics (Hons.)
Paper - I (Indian Economy)
Paper - I

(Dr.) Bipin Kumar
Prof. In-charge
R.R.S. College, Mokama
PPU, Patna

Topic: Cement Industry
Topic: Discuss present position and problems of cement industry in India.

Ans. किसी भी देश के आर्थिक विकास में आधारभूत संरचनाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। आधारभूत संरचनाओं में तीन उद्योग प्रमुख हैं -- जिनमें प्रथम स्थान, लौह एवं इस्पात उद्योग का, द्वितीय स्थान कोयला उद्योग का एवं तृतीय स्थान सीमेण्ट उद्योग का है। आज आधुनिक या वर्तमान समय में सभी परियोजनाएँ सीमेण्ट उद्योग पर ही आधारित हैं यथा, सड़क निर्माण, भवन निर्माण, कारखाना निर्माण, सिंचाई एवं विद्युत परियोजनाएँ, पुल-पुलिया इत्यादि सभी में सीमेण्ट की आवश्यकता होती है।

अब हम सीमेण्ट उद्योग के विकास की चर्चा करेंगे।

हमारे देश में पहला सीमेण्ट उद्योग मद्रास (चेन्नई) में वर्ष 1904 में South India Industrial Ltd. के द्वारा लगाया गया जो असफल रहा। इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध के प्रारंभ तक हमारे देश में सीमेण्ट उद्योग का आयात ही होता रहा। वर्ष 1912-14 के बीच हमारे देश में तीन बड़े सीमेण्ट कारखानों की स्थापना हुई। क्रमशः प्रथम, गुजरात के पोरबन्दर में 'टाटा एण्ड सन्स' के द्वारा 'इंडियन सीमेण्ट कम्पनी' के नाम से, दूसरा, मध्य प्रदेश में 'खटाऊ समूह' के द्वारा 'कटनी सीमेण्ट एण्ड इंडस्ट्रियल कम्पनी', एवं तीसरा, [illegible] में किलिक निक्सन द्वारा 'बूंदी पोर्ट लैंड' के नाम से खोली गयी। प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद सात (7) और कारखाने खोले गये। इस प्रकार वर्ष 1924 में इन सभी की उत्पादन क्षमता 5 लाख टन हो गयी। इसके बीच विदेशों से भी सीमेण्ट का आयात भी होता रहा। इससे उद्योग में आपस में प्रतियोगिता होने लगी -- इसके लिए इस उद्योग ने संरक्षण की मांग की लेकिन सरकार ने स्वीकार नहीं किया। इस कारण देश में प्रतियोगिता को कम करने के लिए वर्ष 1925 में 'इण्डियन सीमेण्ट मैन्युफैक्चरिंग एसोसिएशन' की स्थापना की गयी एवं वर्ष 1927 में 'कंक्रीट एसोसिएशन ऑफ इंडिया' का गठन किया गया जिसका उद्देश्य सीमेण्ट की मांग में वृद्धि करना था। वर्ष 1930 में इन संगठनों को मिलाकर 'सीमेण्ट मार्केटिंग कम्पनी' स्थापित किया गया जिसका उद्देश्य 'सीमेण्ट मार्केटिंग कम्पनी' स्थापित की गयी जिसका उद्देश्य अपने सदस्यों का सीमेण्ट बेचना था।

वर्ष 1936 में 'एसोसिएटेड सीमेण्ट कम्पनी' (A.C.C.) की स्थापना की गयी जिसमें डालमिया समूह की सीमेण्ट कम्पनियों को छोड़कर अन्य सभी कम्पनियाँ उस कम्पनी के सदस्य बन गये और वे सीमेण्ट बेचने लगे।

अब हम विभिन्न योजनाओं (योजना काल) में सीमेण्ट उद्योग के विकास की चर्चा करेंगे। विभिन्न योजनाकाल में सीमेण्ट के उद्योग के विकास के लिए विशेष ध्यान दिया गया फलस्वरूप नये-नये कारखाने खोलने की अनुमति दी गई और पुराने उद्योगों को विस्तार का अवसर प्रदान किया गया। यद्यपि [illegible] प्रथम योजना काल में सीमेण्ट उद्योग के विकास पर [ध्यान दिया] गया। प्रथम योजना के शुरुआत में कुल 21 कारखाने थे एवं सीमेण्ट का उत्पादन

46.7 लाख टन हो गया। योजनाकाल के लगभग वर्षों के कार्यकाल में सीमेंट उद्योग के उत्पादन में 60 गुना से अधिक की वृद्धि हुई है एवं वर्ष 1951 में प्रति व्यक्ति सीमेंट खपत 4.4 कि.ग्रा. था जो अब बढ़कर 100 कि.ग्रा. से अधिक हो गया है। फिर भी यह विश्व के अन्य देशों की तुलना में अभी भी काफी कम है। चीन में प्रति व्यक्ति सीमेंट की खपत 325 कि.ग्रा. है, जापान में 684 कि.ग्रा. जबकि विश्व का औसत सीमेंट खपत 217 कि.ग्रा. है।

अब हम सीमेंट उद्योग की वर्तमान स्थिति की चर्चा करेंगे। वर्तमान में हमारे देश में 130 से बड़े सीमेंट उद्योग एवं 330 से अधिक छोटे सीमेंट कारखाने हैं जिनकी कुल उत्पादन क्षमता 1,632 लाख टन से अधिक है। इस क्षमता का 85 प्रतिशत निजी क्षेत्रों में एवं शेष 15 प्र.श. सार्वजनिक क्षेत्र के हैं। इस उद्योग में करीब 10,000 करोड़ रु० की पूंजी लगी हुई है तथा 3 लाख से अधिक श्रमिक एवं 10 हजार कार्यालय कर्मचारी office staff कार्य करते हैं।

अब हम भारतीय सीमेंट उद्योगों की वर्तमान समस्याओं की बात करेंगे, जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं:

① कोयला की कमी एवं कोयला क्षेत्रों से दूरी: सीमेंट के कारखाने अलग-अलग राज्यों/क्षेत्रों में स्थित हैं। अतः जो कारखाने राजस्थान, गुजरात और दक्षिण भारत में स्थित हैं उन्हें कोयले की आपूर्ति पूर्वी भारत से करना पड़ता है, जिससे कोयला का भाड़ा अधिक देना पड़ता है जिससे कोयले की लागत काफी बढ़ जाती है, इसके फलस्वरूप सीमेंट की कीमत भी बढ़ जाती है।

② परिवहन की असुविधा: इस उद्योग की एक प्रमुख समस्या परिवहन सुविधाओं की भी रही है। यह उद्योग सदैव ही परिवहन संबंधी कठिनाइयों का सामना करता है, जिससे उद्योग एवं उपभोक्ता दोनों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

③ रेलवे वैगनों की अपर्याप्त उपलब्धता: इस क्षेत्र के उद्योगों को कोयला ढोने के लिए रेलवे वैगनों की पर्याप्त उपलब्धता नहीं हो पाती है। इस कारण उन्हें संचालन हेतु दूसरे परिवहन माध्यम से मंगाया जाता है, जिसके कारण सीमेंट उत्पादन लागत भी बढ़ जाती है।

④ बिजली की कमी: इस उद्योग को बिजली की पूर्ति नहीं हो पाती है, जिसका असर सीमेंट के उत्पादन व्यय पर पड़ता है।

⑤ कम क्षमता का उपयोग होना: कोयले की कमी या समय पर उसकी आपूर्ति का नहीं होना, कच्चे माल की कमी या बिजली की अपर्याप्त आपूर्ति

Appointments

के कारण सीमेण्ट उद्योग अपनी क्षमता का बेहतर उपयोग कर रहा है लेकिन फिर भी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं कर रहा है।

(6) उत्पादन शुल्क: हमारे देश में सीमेण्ट उत्पादन पर अधिक शुल्क है जो सीमेण्ट के मूल्य का 30 प्रतिशत से अधिक बैठता है, जिसके कारण सीमेण्ट का विक्रय मूल्य काफी बढ़ जाता है।

(7) पुरानी उत्पादन तकनीक: हमारे देश में सीमेण्ट उद्योग की कई समस्याओं में से एक प्रमुख यह है कि कुछ के कारखानों में आज भी पुरानी तकनीकों का ही उपयोग किया जाता है। इन पुरानी तकनीक (old technique/wet process) को उपयोग में लाने के कारण ऊर्जा का व्यय अधिक होता है, उत्पादन लागत बढ़ जाता है... जिससे सीमेण्ट की कीमत अधिक रखा जाता है।

(8) आधुनिकीकरण की समस्या: हमारे देश में सीमेण्ट कारखाने काफी पुराने हो चुके हैं, इनका आधुनिकीकरण अब तक नहीं हो पाया है। इसके आधुनिकीकरण के लिए करीब 1000 करोड़ रु. की आवश्यकता है... जो अब तक पर्याप्त मात्रा में नहीं हो पाया है।

(9) आर्थिक आकार: हमारे देश के सीमेण्ट उद्योग की एक प्रमुख समस्या इसके आकार छोटे हैं। छोटे कारखाने बढ़ी हुई उत्पादन लागतों को सहन नहीं कर सकते... बड़े उद्योगों के साथ ये प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता एवं उत्पादन व्यय भी अधिक हो जाता है।

(10) विदेशों से आयात: हमारे सीमेन्ट उद्योगों में लगने वाली मशीनों का आज भी आयात किया जाता है जो काफी मंहगी होती हैं जिससे उत्पादन व्यय बढ़ जाता है। हालांकि अब इसके कुछ मशीनों का निर्माण अपने देश में भी होने लगा है।

उपरोक्त समस्याओं के समाधान हेतु निम्नलिखित उपायों को सरकार को प्रयास करना चाहिए जिससे सीमेंट उद्योगों को बढ़ावा दिया जा सके।

(1) कोयला की पर्याप्त आपूर्ति
(2) परिवहन की समुचित व्यवस्था।
(3) रेल वैगनों की पर्याप्त आपूर्ति
(4) कच्चे माल की पर्याप्त उपलब्धता
(5) उद्योग के पर्याप्त क्षमता का उपयोग करने का प्रयास।
(6) उत्पादन शुल्क में कमी
(7) उद्योगों में नये तकनीक का प्रयोग किये जाने की आवश्यकता।

(8) उद्योगों के आधुनिकीकरण का प्रयास
(9) उद्योगों के आकार में वृद्धि
(10) आयात में कमी तथा देश में ही आधुनिक यंत्रों एवं मशीनों का निर्माण।
(11) शोध क्षेत्र को बढ़ाना।

उपरोक्त विश्लेषण विकास, समस्याएं एवं समाधान के बाद इसकी संभावनाओं एवं भविष्य की चर्चा करें तो। हमारे देश में इसके अतीत को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि सीमेंट उद्योग का भविष्य काफी उज्जवल है। यहां प्रति व्यक्ति सीमेंट खपत वर्ष 1951 में जो 9.4 किलोग्राम थी, वर्तमान में यह बढ़कर 110 किलो प्रति व्यक्ति से अधिक हो गयी है। यह खपत विश्व के अन्य देशों यथा, चीन में 325 कि.ग्रा., अमेरिका में 320 कि.ग्रा. एवं जर्मनी में 600 कि.ग्रा. है। जबकि विश्व का प्रति व्यक्ति औसत खपत 217 कि.ग्रा. है। हमारे देश में सीमेंट की माँग उसके उत्पादन से अधिक है। इसके आधार पर हम यह कह सकते हैं कि हमारे देश में सीमेंट उद्योग का भविष्य काफी उज्जवल है। इसका संभावना सकारात्मक एवं लाभदायक है।